vkeq[k

भारतीय अर्थव्यवस्था के आधार से सुस्पष्ट है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग तीन–चौथाई भाग गांवों में निवास करता है जिनकी आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है अतः हम कह सकते हैं कि हमारा देश गांवों का देश है। प्राचीन काल से ही भारत में ग्रामों की संख्या अधिक रही है। प्राचीन काल में ज्ञान, विज्ञान एवं कृषि आदि के क्षेत्र में भारतवर्ष एक साधन विहीन देश माना जाता रहा है। प्राचीन समय में भारत के ग्रामों की स्थिति इतनी अधिक व्यवस्थित, सुखद एवं सुन्दर नही थी। विदेशी शासन के कारण भारत की सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक स्थिति का पतन हुआ। कुछ समय बाद स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के ग्रामीण समुदायों में परिवर्तन का पुनर्निमाण कार्य प्रारम्भ हुआ। अंग्रेजों के आगमन से ही भारतीय समुदाय में परिवर्तन की लहर आई और जो आजादी के बाद और तीव्र हो गई।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत् नियम है। परिवर्तन की प्रकृति, दिशा, दशा और गति चाहें भिन्न हो किन्तु कोई भी वस्तु परिवर्तन के प्रभाव से बच नही सकती। भारतीय ग्रामीण समुदाय परिवर्तन के अपवाद नहीं हैं। यह ठीक है कि ग्रामों में परिवर्तन की गति नगरों की अपेक्षा धीमी रही है, किन्तु ग्राम गतिहीन नही हैं। आज हमारी सरकार भी गांवों के महत्व को समझ रही है और उनकी उन्नति के लिए योजनाबद्ध प्रयास भी कर रही है। इस देश के नवनिर्माण में कृषक वर्ग और भी महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि यह भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त रूढ़िवादी मान्यताओं तथा अनेक प्रकार की आधुनिकीकरण में बाधक निर्योग्यताओं से ग्रस्त रहा है, परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात जातीय व्यवस्था से उत्पन्न अमानवीय भिन्नताओं, भेदभावों और निर्योग्यताओं को समाप्त करके आधुनिक समतावादी समाज स्थापित करने के लिए अनेक प्रयास किए एवं किए जा रहे हैंतथा कृषक आधुनिक शैली को अपनाकर अपनी उपज बढ़ाने के साथ ही आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर रहे हैं तथा ग्रामीण समाज में कृषक आधुनिक किस्म के उन्नतशील बीजों का प्रयोग कर रहे हैं। जो उच्च वर्ग के कृषक हैं वे आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर सभी वर्गों से सम्बन्धित होते हैं, इसलिए समाज के निर्माण में एवं नये कृषि मूल्यों को अपनाने तथा निर्माण में उनकी भूमिका

और भी महत्वपूर्ण हो जाती है इसलिए यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि परम्परागत एवं आधुनिक कृषक में से कौन से कृषक उच्च वर्ग की दिशा में बढ़ रहे हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आधुनिक समाज में कृषकों का योगदान एवं व्यवसायिक एवं आर्थिक मूल्यों का विश्लेषण करना है, पर आशा की जाती है कि शोध प्रबन्ध से प्राप्त सामाजिक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन कृषक के मार्ग को आलोकित करेगी ताकि वे अपनी जीवन शैली व कृषि शैली को आधुनिकता से मिश्रित कर देश में उत्पादन बढ़ाने के साथ ही देश निर्माण में अहम् भूमिका अदा कर सकें। इस शोध से प्राप्त उपलब्धियां ग्रामीण समुदाय में आधुनिकीकरण से प्रभावित सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, कृषिगत, राजनैतिक, सूचना सम्प्रेषण एवं सांस्कृतिक मूल्य एवं धार्मिक प्रक्रिया आदि के प्रतिमानों को प्रदर्शित करता है तथा उक्त उपलब्धियां भविष्य में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालने में सहायक होंगी, यही मेरे कार्य का सर्वोत्तम पुरस्कार होगा।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को साकार रूप प्रदान करने में यद्यपि मेरा अपना परिश्रम है परन्तु इसका सम्पूर्ण श्रेय श्रद्धेय गुरू तथा शोध निर्देशक *Mk0 vfuy d|ekj fl|g]* एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र), छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर के प्रति अपनी कृतज्ञता को शब्दों में प्रकट करना केवल एक औपचारिकता होगी। शोध समस्या के निरूपण से लेकर निर्वाचनात्मक विश्लेषण तक उनके उचित निर्देशन, सुझाव और परामर्श से उपकृत हुआ हूँ जिसके फलस्वरूप शोध समस्या को समाजशास्त्रीय परिवेश में समझने तथा मनोवैज्ञानिक पद्धति तथा मानकों के अनुरूप प्रस्तुत करने में सफल हुआ हूँ। मैं अपनी गुरूमाता *Jherh xk;=h fl|g* के प्रति आभार प्रकट करना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिन्होने माँ तुल्य स्नेह तथा आर्शीवाद प्रदान किया।

समाजशास्त्र विभाग के डॉ. नरेश चन्द्र शुक्ल, एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र) छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होने शोध कार्य को पूरा करने में मुझे सदैव प्रोत्साहित किया तथा समय–समय पर उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का समाधान भी किया।

समाजशास्त्र विभाग के अन्य गुरूजनों Mk- n;k’kdj flg ;kno] Mk- egUn dqekj f=ikBh के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होने समय–समय पर अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे लाभान्वित किया।

मैं इस ज्ञान यश में अपने बड़े भाई foold feJ, एडवोकेट व छोटे भाई fou; feJ (प्रवक्ता) ग्रा.ई.का.डिघिया खेरिया, हरदोई व छोटी बहन कु0 पूजा मिश्रा के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होने मुझे सदैव प्रोत्साहित किया तथा शोध अध्ययन में आयी कठिनाइयों के निवारण में मदद भी की।

मैं अपने पूजनीय पिताजी व माताजी का जीवन भर आभारी रहूँगा जिन्होने मुझे शोध अध्ययन के समय बराबर स्नेह दिया। मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती uferk feJk (सहायक अध्यापक प्रा.वि. चोरहा) के प्रति आभार ज्ञापित करना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिन्होने प्यार स्नेह के साथ–साथ शोध कार्य में तथा सारणीयन में विशेष सहयोग प्रदान किया है।

अध्ययन में चुने गए सभी उत्तरदाता व अध्ययन क्षेत्र के सहयोगी गणों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने तथ्यों के संकलन में धैर्यपूर्वक सहयोग दिया।

यद्यपि इस शोध प्रबन्ध की पूर्ति हेतु मैने विभिन्न व्यक्तियों तथा विद्वानों से सहायता प्राप्त की है परन्तु यदि शोध प्रबन्ध में तथ्यों के प्रस्तुतीकरण तथा व्याख्या में किसी प्रकार की त्रुटि हो तो यह मेरी बौद्धिक सीमाओं का ही परिणाम है।

अन्त में मैं कम्प्यूटर कार्यकर्ता श्री राजीव दीक्षित का भी विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होने समय–समय पर मार्गदर्शन व शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया तथा श्री शशाँक बाजपेई का विशेष आभारी हूँ जिन्होने बहुत लगन व मेहनत से शोध प्रबन्ध के टंकण का कार्य बड़ी कुशलता से पूर्ण किया।

(अभिषेक मिश्र)